

## पंजाब में नहरी बस्तियाँ

गीता देवी \*

एम.फिल्. इतिहास, इतिहास विभाग, म.द.वि., रोहतक (हरियाणा)

प्लासी के युद्ध के बाद बंगाल, बिहार और उड़ीसा में राजस्व एकत्र करने का एकाधिकार कम्पनी को मिल गया। कम्पनी ने शीघ्र ही भारत में ब्रिटिश भूमि-सम्बन्धों को लागू करके नए महत्वपूर्ण परिवर्तन किये, जिनके परिणामस्वरूप किसान मजदूर बन गया। भूमि खरीद-फरोख्त की वस्तु बन गई। पुराने सामंतवादी वर्ग का स्थान भू-स्वामियों के एक नये कुलोन वर्ग ने ले लिया। इन नीतियों के पंजाब पर व्यापक प्रभाव पड़े।

पंजाब प्रारम्भ अर्थात् आर्यों के समय से ही या कहें कि हड़प्पा काल से ही एक उपजाऊ प्रदेश रहा है। यहाँ पर अनेक नदियाँ बहती थी, जिनमें से कुछ लुप्तप्रायः हो चुकी हैं। परन्तु आज भी पंजाब का क्षेत्र गेहूँ तथा चावल की फसल के लिए एक महत्वपूर्ण उत्पादक क्षेत्र है, जिसका अनाज विदेशों को निर्यात किया जाता है।

भारत में सिंचाई व्यवस्था अथवा सिंचाई के साधनों की व्यवस्था करना शासकों का कर्तव्य रहा है, लेकिन ब्रिटिश भारत में डलहौजी के काल से नहरों का निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ। लेकिन 1897 में जब निचली चिनाब नहर बनाई गई वह आर्थिक बदलाव के लिये मील का पत्थर साबित हुई।

पंजाब की 75 प्रतिशत जनसंख्या भूमि कृषि योग्य भूमि कृषि योग्य थी जो पानी न होने, भूमिगत पानी का इस्तेमाल न होने तथा बारहमासी नदियों में पानी न होने के कारण खराब पड़ी थी। विशेषतः पश्चिमी पंजाब के लोग भारी समस्या का सामना कर रहे थे। ब्रिटिश कृषि के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण सुधार नहर कालोनियों के अंतर्गत सिंचाई का विकास था।

कालोनियों को बसाने के दो कारण थे, पहला पंजाब की जनता को शांत रखना तथा उत्पादित फसल को इंग्लैंड भेजना तथा दूसरा था सूखे को रोकना और सबसे महत्वपूर्ण था, कालोनियों से सरकार को बहुत अधिक राजनीतिक तथा आर्थिक फायदा हो सकता था।

### प्रारम्भिक समस्याएँ

कालोनी परियोजना को लक्ष्य को पूरा करना इतना आसान कार्य नहीं था। साधारणतया देश में चौड़ा पड़ा खाली क्षेत्र तथा बढ़ती जनसंख्या की समस्या को हल करना था। वहाँ की जलवायु गर्म थी तथा यातायात के साधनों का अभाव था। उस क्षेत्र में पहुँचने के लिए बैल, ऊँट तथा घोड़े ही एकमात्र साधन थे। मजदूरों की कमी थी। मण्डियों का

\* शोधार्थी, इतिहास विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक।

अभाव था। इन समस्याओं को दूर करने में वहाँ के अधिकारियों, इंजिनियरों ने तथा सबसे ज्यादा भूमिका पंजाब की जनता ने निभाई।

### कॉलोनी वासियों का चयन

पंजाब में जो लोग कॉलोनी देने के लिए चुन गये उनका चयन ध्यानपूर्वक किया गया। व मुख्यतः मध्य पंजाब से लिये गये थे। ये वे किसान थे जो मेहनती थे और शारीरिक रूप से चुस्त-दुरुस्त थे। कुछ लोग ऐसे थे जिनके पास खुद की जमीन तो थी परन्तु उस पर मालिकाना हक नहीं था। प्रारम्भ में चयन की कोई खास-प्रक्रिया नहीं अपनाई गई लेकिन बाद में उनका बंटवारा किया गया। मध्य पंजाब में सिक्ख जाटों को जगह दी गई तथा इनके चारों ओर मुहम्मडन जाट, गुर्जर, राजपूतों को जगह दी गई। बाहरी हिस्सा नोमड (Nomad) अथवा जिन्हें जंगली कहा जाता था उन्हें दिया गया। 1901 में 79653 सिक्ख जाट 445445 एकड़ भूमि पर कृषि कर रहे थे। सबसे निचली जगह उन किसानों को दी गई जिनके पास 28 एकड़ से अधिक जमीन थी।

### कॉलोनिस्टों के प्रकार

कॉलोनिस्टों को तीन भागों में बांटा गया— 1. जमींदार, 2. किसान, तथा 3. किरायेदार। कुछ कॉलोनिस्ट उनके सर्विस ग्रांट, कुछ मिलिटरी ग्रांट तथा प्लांटिंग ग्रांट की वजहों से थे। सर्विस ग्रांट ऊंट की सेवा देने वालों को दी जाती थी। यह उन्हें 20 साल तक जाती थी हालांकि वे रिन्यू भी करवा सकते थे, परन्तु उन्हें कोई अधिकार नहीं दिये गये थे। प्लांटिंग ग्रांट पाने वाले जमीन का आधा हिस्सा मालिक अपने लाभ के लिए बो सकता था। मिलिटरी ग्रांट पाने वाले मुख्यतः पंजाब, कश्मीर तथा उत्तरी-पश्चिमी प्रान्तों के सिपाही थे।

जमींदार स्वयं खेती न करके अधिकतर काश्तकारों से करवाते थे। किसानों को जमीन का उत्पादन भाग, पानी का खर्चा और एक वार्षिक फीस जिसे 'मालिकाना' कहा जाता था सरकार को देने पड़ते थे। एक निश्चित समय के खत्म होने के बाद जो कि साधारणतः 10 वर्ष होता था, उन्हें निचली झेलम कालोनी और निचली चिनाब कालोनी में रहने का अधिकार दे दिया गया। सबसे बड़ी श्रेणी कैनाल कालोनियों में किसानों की थी। 1892-1905 के बीच यह सबसे बड़ी कालोनी थी जिसमें 2 मिलियन एकड़ भूमि प्रदान की गई थी। आर्यन को 11 प्रतिशत, कम्बोजों को 3 प्रतिशत, 3.3 प्रतिशत, मुगलकालीन अभिजात्य वर्ग जिसमें सैय्यद, कुरैशी तथा ब्राह्मण थे। सोहाग कॉलोनी में 38 प्रतिशत सिक्ख जाट थे। प्रथम विश्व युद्ध के बाद 1,60,000 एकड़ जमीन सैनिकों को दी गई क्योंकि पंजाब के सैनिकों की भागीदारी युद्ध में सबसे ज्यादा थी।

### कैनाल कॉलोनी बिल

कैनाल कालोनियों की सफलता के बाद पंजाब सरकार ने कॉलोनाइजरस पर काबू पाने के लिये अधिक बिल जुमाने का कानूनीकरण कर इसे पुराने, नियमों में शामिल कर दिया गया। पंजाब काँग्रेस के भारतीय सदस्यों ने काँग्रेस के इतिहास के 10 साल में पहली बार इस बिल का विरोध किया गया। इस बिल को असंवैधानिक करार देकर अधिकतर बड़े अखबारों ने विरोध किया। लाला लाजपत राय तथा अजीत सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया। 9 मई 1907 को स्थिति की गंभीरता को देखते हुए दोनों नेताओं को छोड़

दिया गया। 11 मई को कॉलोनाइजेशन बिल रद्द कर दिया गया तथा सिंचाई कर आधा कर दिया गया।

### कनाल कॉलोनियों का महत्व

कैनाल कॉलोनियों के अस्तित्व में आने से पंजाब के आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक इतिहास में एक नया मोड़ आया। जो जिले पहले अपनी जनसंख्या के लिए दो समय का भोजन नहीं जुटा सकते थे, अब वे भारत की 'रोटी की टोकरी' (Bread Basket) बन गये। अब वे बाहरी देशों के लिए भी निर्यातक की भूमिका निभाने लगे। किरायेदारों के ध्वीकरण से कॉलोनीकरण को एक नई आकृति मिली। कॉलोनीकरण के कारण शहरीकरण का विकास हुआ। कॉलोनियों के निकट अनेक मण्डिया स्थापित हुई। सामाजिक स्थिति अच्छी होने के कारण शिक्षा का विकास हुआ, व्यय दर में बढ़ोतरी हुई। किसानों का दिमाग मौसम की अनिश्चितता से मुक्त हो गया। राजनीति में भी किसानों की भागीदारी बढ़ गई।

किसानों तथा जमींदारों के बीच एक प्रतिनिधि की भूमिका Cooperative Form ने निभाई। इसके सदस्य कालोनोवासी ही थे। उनका इस समिति पर पूरा नियंत्रण था। वे अपनी जमीन जैसे चाहे रख सकते थे। मॉन्टगोमरी में इस प्रकार की 5 समितियां स्थापित की गई थी। इन समितियों द्वारा व्यवसायिक सुविधाएं खरीदना, शिक्षा की संस्थाएं तथा मनोरंजन के लिए रंगशालाओं की स्थापना की गई।

लायलपुर, शाहपुर, मॉन्टगोमरी, सोहागी चारों कालोनीज को मिलाकर साल में 4 मिलियन एकड़ भूमि सिंचित होती थी। इनसे वार्षिक आय 28.5 करोड़ थी। 1920-21 में सोने-चांदी 3,000,000 डॉलर का आयात किया गया। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कैनाल कॉलोनियों ने पंजाब के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

### संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मजूमदार, रजत कुमार, *द इण्डियन आर्मी एंड द मेकिंग ऑफ पंजाब*, न्यू दिल्ली, 2003।
2. हबीब, इरफान, *द अग्रेयन सिस्टम ऑफ मुगल इंडिया, 1505-1707*, ऑक्सफोर्ड प्रेस, न्यू दिल्ली, 1999।
3. छाबड़ा, जी.एस., *सोशल एंड इकोनोमिक हिस्ट्री ऑफ द पंजाब*, जालन्धर, 1962।
4. गडा सिंह, *पंजाब (1849-1960)*, पटियाला, 1962।
5. डार्लिंग, एम.एल., *पंजाब पीजैन्ट लाईफ*, न्यू दिल्ली, 1984।
6. पॉवेल, बी.एच., *द लैंड सिस्टम ऑफ ब्रिटिश इण्डिया*, ऑक्सफोर्ड, 1892।